AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

हिंदी के विकास में भोजपुरी का योगदान

ORIGINAL ARTICLE

Author

मेधावी

एम. ए. हिंदी

बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय

मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

शोध सार

आज एक विशाल भू–भाग की भाषा बन जाने के कारण हिंदी भारत की संपर्क भाषा का स्थान ले रही है। संवैधानिक तौर पर यह भारत संघ की राजभाषा तो है परंतु इसे अनेक हलकों से राष्ट्रभाषा घोषित किए जाने की भी मांग उठ रही है। कोई भी भाषा तभी जीवंत रह सकती है या किसी भाषा को तभी विस्तार मिल सकता है जब उसमें अन्य भाषाओं के शब्दों और शैलियों को भी ग्राह्य करने की भरपूर क्षमता हो। हिंदी में स्वाभाविक रीति से बंगला, गुजराती, मराठी, उड़िया, असामिया, तमिल, तेलुगू, कन्नड़ एवं मलयालम के अनुवाद रूप के मुहावरे एवं बहुप्रचलित शब्द अपने आप आते जा रहे हैं। अँग्रेजी के अनेक मुहावरों के अनुवाद हिंदी में समाहित हो गए हैं। इसमें तो कोई संदेह ही नहीं है कि पहाड़ी, राजस्थानी, मैथिली, मगही एवं भोजपुरी के शब्द एवं मुहावरे हिंदी में स्वाभाविक रूप से प्रयुक्त होकर हिंदी को समृद्ध बना रहे हैं। वस्तुतः यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, कह लें कि भाषा का स्वाभाविक गुण है। यह ऐसा गुण है जिसके अभाव में भाषा विशेष के प्रयोक्ता में निरंतर कमी आने लगती है, भाषा प्रायः समाप्त भी हो जाती है। इस शोधालेख का मूल ध्येय है हिंदी के विकास में भोजपुरी शब्दों, मुहावरों और उसकी शैलियों के योगदान का मूल्यांकन करना।

मुख्य शब्द

हिंदी, भोजपुरी, भारत, भाषा.

प्रेमचंद, राहुल सांकृत्यायन, रामवृक्ष बेनीपुरी, फणीश्वर नाथ रेणु, नागार्जुन जैसे हिंदी के अनेक ऐसे महान लेखकों ने स्थानीय एवं आंचलिक शब्दों का प्रयोग अपनी कृतियों में किया है। भोजपुरी चूंकि पश्चिमी मागधी अपभ्रंश से उत्पन्न भाषा है और जो पश्चिमी बिहार तथा उत्तरप्रदेश के गोरखपुर, आजमगढ, वाराणसी आदि क्षेत्रों में प्रचलित है अतः हिंदी पर इसका प्रभाव होना लाजमीय है। भोजपुरी एक भाषा के रूप में पल्लवित होती जा रही है और इस अर्थ में यह अंतर्राष्ट्रीय भाषा है कि भारत के बाहर यह मारिशस, त्रिनीडाड, गयाना, सूरीनाम एवं जमैदा में भी बोली जाती है। भोजपुरी और हिंदी में समानताएँ ढूँढना सहज है चूंकि आज की हिंदी का स्वरूप सौरशेनी, मागधी और अर्ध मागधी अपभ्रंश से विकसित हुआ है जबकि भोजपुरी मागधी से। हिंदी के विकास में भोजपुरी ने अपना उल्लेखनीय योगदान दिया है, आइए हम इसे अनेक दृष्टांतों से समझते हैं:

''बेहया का जंगल'' डॉ. कृष्णविहारी मिश्र का ललित निबंध संग्रह है। अपने निबंधों में डॉ. मिश्र ने खुलकर भोजपुरी संज्ञा, नाम धातु, क्रियापदों एवं कृदंतों का प्रयोग किया है। ''कटान'' और ''ढाही'' शब्द को हम लेते हैं।

ये दोनों शब्द भोजपुरी के हैं। गंगा किनारे वाले क्षेत्रों में बाढ़ आने पर गाँव के गाँव कट कर गंगा में बह जाते हैं। इस क्रिया–व्यापार ने कटान शब्द को निर्मित किया है। इसी प्रकार बाढ़ में जमीने धीरे–धीरे ढहती जाती हैं और खेत के खेत ढाही की चपेट में आ ही जाते हैं। आशय यह है कि हिंदी में इन दोनों भोजपुरी शब्दों के प्रयोग को समझने में पाठकों को कोई दिक्कत नहीं होती है। अन्य एक उदाहरणः भोजपुरी में बेजाँय शब्द चलता है, जो फारसी के ''बेजा'' से बना है। हिंदी में इसका प्रयोग देखिए ''जहाँ पाप की बाढ़ में सारा जवार डूब गया है वहाँ गंगा जी का इतना ऊब होना बेजाँय क्या है।''

कुछ और शब्द देखें

ताकनाः भोजपुरी के इस शब्द का अर्थ है देखना। हिंदी में इसका प्रयोग देखें. ''ताकते रहते तुझको साँझ सबेरे..... ।''

टोकनाः भोजपुरी में इसका अर्थ है एकाएक बोल पड़ना। हिंदी में प्रयोग देखें ''मोदी जी के भाषण में राहुल ने व्यर्थ ही टोका।''

जवारः अर्थ है इलाका। वह मेरे जवार का है।

अगोरनाः रखवाली करना। मुझे कार्यालय जाना है, तुझे अगोर कर कैसे बैठूँ।

जाबनाः बंद करना। चारा घोटालेबाज ऐसे चुप हैं जैसे कोई मुंह जाब दिया हो।

बेजाँयः व्यर्थ। परिश्रम बांव नहीं जाएगा।

मटकी मारनाः आँखों से इशारा करना। वह लड़कियों को मटकी मारता रहता है।

रुखरः रुक्ष/कठोर। उसकी भाषा बहुत रुखर है।

लुत्तीः चिंगारी। एक लुत्ती काफी है उजाला करने के लिए।

कलम रेहन रखनाः कलम गिरवी रखना। तुलसी दास किसी राजदरबार में अपनी कलम रेहन रखने वालों में नहीं थे।

अगरानाः इतराना। वह अपने प्रेमी के सामने बहुत अगराती है।

उतानः उठा हुआ। वह सीना उतान करके चलता है।

मेहरानाः ठंढा होना। भूँजा मेहराया हुआ है।

भोजपुरी के मुहावरों का हिंदी में प्रयोग के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैंः

आँख की पुतली जुड़ानाः अति प्रसन्न होना। अमेरिका से आए बेटे को देख बुढिया के आँख की पुतली जुड़ा गई।

दिन भर की खटनीः बहुत परिश्रम करना। किसान जब खेत में दिन भर की खटनी के बाद घर लौटता है...।

लंगोटा का पक्काः स्त्रियॉ पर जो नहीं फिसलता हो। सच्चे संत लंगोटे के पक्के होते हैं।

खेत पर चढ़ जानाः कब्जा कर लेना। बाहुबली लोग गरीबों के खेत पर चढ़ जाते हैं।

भोजपुरी की कहावतों के अनुवाद भी हिंदी में अपना स्थान बना चुके हैं, जैसेः ''जब जइसन तब तइसन इहे ना बूझल से मरद कइसन।'' इसका हिंदी प्रयोग हैः जब जैसा तब तैसा यह न समझे तो मर्द कैसा।

बृहतर हिंदीभाषी समाज संदर्भ बोध से हिंदी में भोजपुरी के इन शब्दों या वाक्यांशों सहजतापूर्वक समझ सकता है। यह तथ्य है कि किसी भी भाषा का अपरिचित शब्द संदर्भ का ज्ञान होने पर अपना अर्थ ध्वनित अवश्य करता है। हिंदी में प्रयुक्त उपर्युक्त भोजपुरी शब्दों, पदबन्धों एवं मुहावरों को भोजपुरी भाषी क्षेत्र के लोग तथा मारीशस, गयाना, त्रिनिडाड एवं जमैका द्वीपों के हिंदी भाषी सहज रूप से हृदयंगम कर लेंगे लेकिन वहीं पंजाब, दिल्ली, मेरठ,

बुलंदशहर, फर्रुखाबाद तथा कानपुर के निवासियों के लिए इन्हें पूर्णतः समझ लेना कठिन होगा। यहाँ तक कि ब्रज, कन्नौजी, राजस्थानी, पहाड़ी एवं बुंदेलखंडी भाषियों के लिए भी इन्हें सहजता से समझ लेना आसान नहीं है।

भाषा विज्ञान के आधार पर भोजपुरी हिंदी की एक बोली है, एक उप भाषा है हिंदी की। यह दीगर बात है कि इसे एक स्वतंत्र भाषा का रूप देने के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित करने की भी मांग उठ रही है। अनेक विश्वविद्यालयों में भोजपुरी की पढ़ाई भी हो रही है। इससे इतना तो स्पष्ट है कि भोजपुरी का कद बढ़ता जा रहा है और हिंदी के विकास में इसके योगदान से इनकार नहीं किया जा सकता है। भोजपुरी भाषा के प्रभाव से हिंदी शब्दावली में वृद्धि हुई है। कई भोजपुरी शब्दों, वाक्यांशों और पदबन्धों को हिंदी में शामिल किए जाने से हिंदी भाषा की अभिव्यक्ति क्षमता में वृद्धि हुई है। यह विषय निश्चित रूप से अन्वेषण की हकदार है।

वैसे देखा जाए तो भोजपुरी की जड़े काफी मजबूत है। इसे स्वाधीनता, वीरता, परंपरा और संस्कृति के प्रतीक के रूप में मान्यता प्राप्त है। यह भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। अपनी अनूठी धवन्यात्मक विशेषताओं के लिए यह जानी जाती है। स्वरों का अनुनासिकीकरण इसकी खास विशेषता है। इन विशेषताओं के कारण एक विशिष्ट सांगीतिक गुणवाता इसके साथ जुड़ जाती है। अपनी मिठास और सरलता से समझी जाने वाली विशेषताओं के कारण ही भोजपुरी अनेक हिंदी फिल्मों में भी प्रयुक्त हुई हैः कहीं स्वतंत्र रूप से और कहीं हिंदी का हिस्सा बनकर। स्वतंत्र रूप से भोजपुरी गानों और भोजपुरी सिनेमा की लोकप्रियता तो जगजाहिर है। यहाँ भोजपुरी के लोक कलाकार भिखारी ठाकुर और महिंदर मिसिर की चर्चा करना आवश्यक है। समाज की कुरीतियों पर प्रहार करने के लिए भिखारी ठाकुर ने नाच–गाने और अपनी भोजपुरी कविताओं का सहारा लिया। भिखारी ठाकुर के संदेश बिलकुल स्पष्ट थे और भाषा थी भोजपुरी। भिखारी ठाकुर को इतनी अधिक लोकप्रियता मिली कि उनको भोजपुरी का शेक्सपियर तक कह दिया गया। अन्य नाम इस क्षेत्र में महिंदर मिसिर का आता है। भोजपुरी में समाज की कुरीतियों पर अपने गीतों के माध्यम से मिसिर जी ने उंगली उठाई है। भोजपुरी में लिखे व गाए गए महिंदर मिसिर के गाने हिंदी भाषी प्रदेशों में रुचि के साथ सुने जाते थे। यह भोजपुरी की ताकत है, उसकी जीवंतता है, उसकी प्रभावशीलता का प्रमाण है।

निष्कर्ष

अपनी स्थानीय पहचान बनाए रखते हुए, अपनी प्रसिद्धि और प्रभाव के कारण भोजपुरी भाषा हिंदी साहित्य तथा संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। यह सुखद है कि हिंदी और भोजपुरी दोनों को एक–दूसरे से कोई परहेज नहीं है। जिनकी मातृभाषा भोजपुरी है वे भी अपनी शिक्षा का माध्यम हिंदी ही रखते हैं तथा अधिक से अधिक लोगों तक अपनी अभिव्यक्ति पहुंचाने के लिए हिंदी का ही प्रयोग करते हैं। उन भाषाविदों और विद्वानों को पूरा समर्थन दिए जाने की आवश्यकता है जो एक विशाल जन समुदाय की भाषा भोजपुरी को संरक्षित करने और उसे बढ़ावा देने के लिए प्रयासरत हैं।

संदर्भ सूची

1. मिश्र, कृष्णविहारी (1981) *बेहया का जंगल,* साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
2. ठाकुर, हरिनारायण (2025) *लोक कलाकार भिखारी ठाकुर,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

––==00==––